International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 27-03-2026, Accepted: 27-04-2026, Published: 12-05-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 30-33

ख़रामा ख़रामा': यात्रा साहित्य में पंकज बिष्ट की विशिष्ट दृष्टि का विश्लेषण

निरुपमा तिवारी
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सुरेंद्र सिंह जीना राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय स्याल्दे, अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत

सारांश
समकालीन हिंदी साहित्य जगत में पंकज बिष्ट जी का नाम बड़े ही आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। पंकज बिष्ट ने अपने उपन्यासों और कहानियां के माध्यम से हिंदी कथात्मक साहित्य के क्षेत्र को तो समृद्ध बनाया ही है साथ ही पत्रकारिता और कथेतर साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज की है। उनका यात्रा वृतांत संग्रह ख़रामा–ख़रामा हिंदी यात्रा साहित्य की परंपरा में एक महत्वपूर्ण कृति के रूप में स्थापित है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य इस संग्रह के माध्यम से पंकज बिष्ट जी की वैचारिक दृष्टि, संवेदनात्मक गहराई और सामाजिक प्रतिबद्धता का विश्लेषण करना है। अपने द्वारा की गई यात्राओं के दौरान उनकी रचना धर्मिता केवल स्थलों के बाह्य विवरण तक सीमित नहीं रही थी बल्कि इन यात्रा विवरण के माध्यम से वे अपने आंतरिक अनुभव, सामाजिक यथार्थ और संस्कृतिबोध को सशक्त ढंग से अभिव्यक्त कर पाए हैं। पंकज बिष्ट अपनी यात्रा के दौरान साधारण जनजीवन, स्थानीय परिवेश और सामाजिक विसंगतियों को सूक्ष्म दृष्टि से देखते हैं और उन्हें अत्यंत सहज और प्रभावशाली भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। उनकी दृष्टि में एक ओर मानवीय संवेदनशीलता और सौंदर्य बोध है तो दूसरी ओर सामाजिक सरोकार और आलोचनात्मक चेतना भी स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। उनकी यह कृति भाषा के सरल, प्रभावपूर्ण और प्रभावशाली प्रयोग के कारण पाठकों को यात्रा के साथ–साथ विचारों की गहराइयों तक ले जाती है। 'ख़रामा–ख़रामा' में पंकज बिष्ट की जनपक्षधर दृष्टि, यथार्थ बोध और वैचारिक प्रतिबद्धता इसे एक विशिष्ट यात्रावृतांत संग्रह के रूप में स्थापित करती है। यह शोध पत्र 'ख़रामा–ख़रामा' के माध्यम से पंकज बिष्ट की वैचारिक प्रतिबद्धताओं, शैलीगत विशेषताओं तथा यात्रा साहित्य में उनके विशिष्ट योगदान को रेखांकित करने का एक प्रयास करता है।

मूल शब्दः पंकज बिष्ट, यात्रा साहित्य, यात्रा वृतांत, विशिष्ट दृष्टि, संवेदनात्मक अभिव्यक्ति

पंकज बिष्ट समकालीन हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण और सशक्त हस्ताक्षर हैं। हिंदी साहित्य में उनका योगदान कहानी, उपन्यास, पत्रकारिता और कथेतर साहित्य के क्षेत्र में विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। पंकज बिष्ट मूलत उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र से आते हैं इसलिए उनके लेखन में पहाड़ी जीवन, सामाजिक यथार्थ और आम–जन की समस्याओं का सजीव और संवेदनात्मक चित्रण भी मिलता है। हिंदी साहित्य जगत में उनका उपन्यास 'लेकिन दरवाजा', 'उस चिड़िया का नाम' और 'पंख वाली नाव' उल्लेखनीय हैं, इसके अलावा 'पन्द्रह जमा पच्चीस' उनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। कथा साहित्य के साथ–साथ कथेतर साहित्य में भी पंकज बिष्ट जी ने अपनी रचनात्मक उपस्थिति दर्ज की है। उनके यात्रा –वृतांत और निबंध विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित होते रहे हैं जिसमें सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदनाएं और समकालीन जीवन की जटिलताओं का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। पंकज बिष्ट उन रचनाकारों में से है जो समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं के कारण जाने जाते रहे हैं। यही कारण है कि उन्होंने सामाजिक सरोकारों के प्रति अपनी गहरी प्रतिबद्धता को मूर्त रूप देने के लिए सरकारी सेवा की पत्रकारिता से अलग होकर स्वतंत्र वैचारिक और रचनात्मक हस्तक्षेप का मार्ग चुना और 1999 से अपने निजी प्रयासों से 'समयांतर' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया जो आज भी जारी है। 'समयांतर' हिंदी की एक ऐसी महत्वपूर्ण वैचारिक पत्रिका के रूप में स्थापित है जिसमें उच्च स्तर के समसामयिक विमर्श और गहन विश्लेषणात्मक सामग्री प्रकाशित होती रही है। इस पत्रिका के माध्यम से पंकज बिष्ट ने समाज, राजनीति, संस्कृति तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य से जुड़े विविध मुद्दों को गंभीरता और बौद्धिक दृष्टि के साथ उठाया है।

कथेतर साहित्य के क्षेत्र में पंकज बिष्ट जी की कृति 'ख़रामा–ख़रामा' विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो एक यात्रा–वृतांत संग्रह है। जिसमें विभिन्न समय पर की गई यात्राओं को एक समग्र रूप में संकलित किया गया है। पंकज बिष्ट के यात्रा–वृतांत यात्रा के बहाने समाज, संस्कृति और मानवीय जीवन की सूक्ष्म पड़ताल के दस्तावेज माने जा सकते हैं। इस कृति में उनकी विशिष्ट दृष्टि, संवेदनात्मक गहराई और सामाजिक सरोकार स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। इस यात्रा वृतांत में पंकज बिष्ट की उन यात्राओं को संग्रहित किया गया है जो उन्होंने लगभग चार दशक के अंतराल में की थी। 'ख़रामा–ख़रामा' का प्रकाशन 2012 में हुआ। इस संग्रह के यात्रा वृत्तांतों को तीन भागों में बांटा गया है–पहला भाग है–पश्चिम प्रांतर, दूसरा भाग सुदूर पूर्व और तीसरा भाग है–उत्तरांचल। इस यात्रा–वृतांत संग्रह में संकलित अधिकांश यात्राएं विशेष रूप से गुजरात और उत्तराखंड से जुड़े स्थानों पर केंद्रित हैं क्योंकि इन दोनों ही क्षेत्र के प्रति पंकज बिष्ट का गहरा आत्मीय संबंध रहा है। उत्तराखंड उनकी मूल सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और जीवन अनुभवों से जुड़ा क्षेत्र है जबकि गुजरात से उनका पारिवारिक संबंध स्थापित रहा। यही कारण है कि इन क्षेत्रों से जुड़े स्थलों के प्रति उनका दृष्टिकोण केवल वाह्य पर्यटक दृष्टि तक सीमित नहीं रहता बल्कि उसमें आत्मीयता, संवेदनशीलता और गहन समझ का समावेश दिखाई पड़ता है। इन यात्राओं के माध्यम से पंकज बिष्ट ने इन क्षेत्रों के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व को न केवल देखा बल्कि उसे वैचारिक दृष्टि से समझने और प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया। वे स्थान के बाह्य स्वरूप के साथ–साथ वहां के जनजीवन, परंपराओं और अंतर्निहित सामाजिक यथार्थ को भी उद्घाटित करते हैं जिससे उनका यात्रा–वृतांत गहन और बहुआयामी रूप ग्रहण कर लेता है। इस संग्रह में संकलित उनके यात्रा–वृतांत 'विद्रोह की पगडंडी: मीरा के देश में एक नास्तिक' के संदर्भ में युवा आलोचक आनंद पांडेय अपने एक लेख में लिखते हैं–"यह केवल यात्रा वृतांत नहीं है क्योंकि यह इस विधा के परे जाता है। यह मीरा की खोज का एक सफल प्रयास भी है। इसमें मीरा के जीवन और काव्य पर अंतर्दृष्टि पूर्ण आलोचना भी है। इस तरह लेखक का अपना देश और काल मीरा का देश और काल मीरा

की रचनाओं का आलोचनात्मक पुनर्वाचन और संगीत की परंपरा में मीरा की उपस्थिति की पड़ताल के कई धरातलों पर एक साथ गतिमान यह लेख वस्तुतः मीरा के सागर को गागर में भरने का एक विरल कार्य है। मीरा के बारे में संक्षेप में कुछ सार्थक और मूल्यवान पढ़ना हो, मीरा के जीवन और काव्य के विभिन्न पक्षों से जुड़ी सारी सूचनाओं को बिना अकादमिक शुष्कता के जानना हो, उनके काव्य को समझने की दृष्टि पानी हो, और उनकी रचनाओं का सार ग्रहण करना हो तो पंकज बिष्ट के लेख 'विद्रोह की पगडंडी: मीरा के देश में एक नास्तिक' से बढ़िया लेख शायद ही कोई मिले।"बया पत्रिका पृष्ट संख्या 180

पंकज बिष्ट के यात्रा वृतांतों की प्रमुख विशेषता उनमें तथ्यात्मकता और स्थानीयता का संतुलित समन्वय है। यात्रा वृतांत में स्थानीयता का चित्रण यात्रा वृत्तांत में रोचकता जीवंतता, यथार्थपरकता, आत्मीयता एवं प्रमाणिकता के गुणों को समाहित करता है। स्थानीयता के माध्यम से यात्रा–वृतांत में सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक वास्तविकता और मानवीय संवेदनाएं भी उभरकर सामने आती हैं, इसलिए यात्रा–वृतांत लिखते समय लेखक को स्थानीयता के चित्रण का भी विशेष रूप से ध्यान रखना आवश्यक है। पंकज बिष्ट की यात्रा वृतांतों में स्थानीय परिवेश, जनजीवन, बोली, भाषा, रीति–रिवाज तथा भौगोलिक विशेषताओं का सूक्ष्म और सजीव चित्रण मिलता है। वे जिस स्थान का वर्णन करते हैं वहां की प्रकृति, गांव, नगर, सामाजिक व्यवहार और सांस्कृतिक परिस्थितियों को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि पाठक उस वातावरण से आसानी से जुड़ जाता है। इसके साथ ही वे जिन स्थलों की यात्रा करते हैं उसका केवल वाह्य वर्णन नहीं करते बल्कि वहां के ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को भी प्रमाणित रूप से प्रस्तुत करते चलते हैं। इस कारण उनके लेखन में तथ्यात्मकता एक सुदृढ़ आधार के रूप में उपस्थिति रहती है। पंकज बिष्ट अपनी यात्राओं के दौरान देखे गए प्राकृतिक दृश्यों, नगरों, गाँवों, मठ, मंदिर को अत्यंत संवेदनशील दृष्टि से ग्रहण करते हैं। इन सब के प्रति उनकी जो मानसिक और भावनात्मक प्रतिक्रियाएं होती हैं उन्हें भी वे सहज एवं प्रभावशाली ढंग से अपनी यात्रा–वृतांत में अभिव्यक्त करते हैं। उनके यात्रा–वृतांत की विशेषताएं यह है कि उसमें स्थानीय जीवन, परिवेश और संस्कृति का जीवंत चित्रण तथ्यात्मकता के साथ इस प्रकार जुड़ा हुआ है कि वे दोनों एक–दूसरे के पूरक बन कर उभरते हैं। इस संदर्भ में उनके यात्रा–वृतांत 'अपने देश में अपनी तलाश' के इस अंश को देखा जा सकता है जहां वे लिखते हैं–"बिल्कुल छोटा सा स्टेशन है द्वारका। पर नाम बहुत सुना है। हिंदू मठ है। चार धामों में से एक धाम। आसपास नमक बनाने वाले खेत हैं, जो बतलाते हैं, समुद्र आसपास ही कहीं है। और है उजाड़, दूर–दूर तक फैली बीरानी–सी। चारों ओर, छोटे–छोटे टीले, पथरीली काली–सी मिट्टी और खुश्क हवा उड़ा लेने के अंदाज में बताती हुई सी चलती। कस्बे में घुसते ही पहले टैक्स देना पड़ता है। तीर्थ है, यूं ही पुण्य कमाओगे ? शुल्क शहर में घुसने या दर्शन करने का, पता नहीं।"[2] यहां लेखक ने द्वारका जैसे धार्मिक स्थल का उल्लेख करते हुए उसे चार धाम में से एक बताते हुए ऐतिहासिक और सांस्कृतिक तथ्य को सामने रखा है। उसके साथ ही आसपास नमक बनाने वाले खेत और समुद्र के निकट होने जैसी बातें उस स्थान के वास्तविक भौगोलिक और आर्थिक स्थिति को प्रमाणित रूप से प्रस्तुत करते हैं। साथ ही यहां स्थानीयता का चित्रण भी अत्यंत तक सूक्ष्म और जीवंत रूप में दिखाई पड़ता है। "छोटा सा स्टेशन", "उजाड़ सी बस्ती", "काली पथरीली मिट्टी", "सूखी हवा"आदि के विवरण के माध्यम से उस क्षेत्र के प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश को मूर्त रूप में सामने लाने का वह प्रयास करते हैं जिससे पाठक उसे स्थान की वास्तविक अनुभूति करने लगते हैं इसके अलावा "कस्बे में घुसते ही टैक्स देना पड़ता है" और "तीर्थ है, यूं ही पुण्य कमाओगे" जैसे कथन स्थानीय जीवन व्यवस्था और सामाजिक व्यवहार की ओर संकेत करते हैं, जो स्थानीय यथार्थ को और अधिक प्रमाणित बनाते हैं। इसी संदर्भ में उनके यात्रा वृतांत 'विद्रोह की पगडंडीः मीरा के देश में एक नास्तिक' के इस अंश को भी देखा जा सकता है जिसमें पंकज बिष्ट जी ने गुजरात क्षेत्र की रेल– यात्रा और उसके आसपास के ग्रामीण एनं नगरीय क्षेत्र का वर्णन किया है। यहां स्थानीयता केवल स्थान विशेष के उल्लेख तक सीमित नहीं रही है बल्कि भौगोलिक, सामाजिक, प्राकृतिक और अनुभव के अनुपात में अभिव्यक्त होकर यात्रा वृत्तांत को अत्यंत यथार्थपरक और संवेदनात्मक बनाती है।–"सर्दी के मौसम के बावजूद अहमदाबाद की सुबह आरामदायक थी। ओखा जाने वाली गाड़ी ने, जो संभवतः तब मुंबई से आती थी, सात बजे चलकर दस घंटे की थकाऊ और उबाऊ यात्रा के बाद शाम को द्वारका छोड़ा था। यह रेल सौराष्ट्र के पाँच सौ किलोमीटर लंबे प्रायदीप से बलखाती हुई एक सिरे से दूसरे तक सिरे तक गुजरती है। ट्रेन ज्यों–ज्यों पश्चिम को बढ़ती है सुखा और वीरानापन बढ़ता जाता है। जामनगर के बाद तो स्थिति काफी विकट हो जाती है। उत्तर की ओर कच्छ की खाड़ी बीस–पच्चीस किलोमीटर से भी कम दूरी पर समानांतर चलती है। नक्शा देखें तो 'ओखा' का रण एक तरह से जामनगर के बाद ही शुरू हो जाता है और उस छोर तक जाता है जहां से प्रायद्वीप का अंतिम सिरा उत्तर की और गैंडे के सींग का तीव्र मोड़ लेता है। वीराने के लंबे–लंबे अंतरालों के बाद किसी बस्ती के चिन्ह नजर आते हैं। कीकर और बबूल की झाड़ियां के बीच कभी–कभी एक आध पेड़ भी दिखाई पड़ जाता था। भेड़–बकरियों को चराता लाठी के सहारे एक पैर पर खड़ा कोई भरवाड़ भुवन शोम के दर्शन की याद दिला देता था।"[3]

स्थानीयता के चित्रण के साथ–साथ तथ्यात्मकता यात्रा वृत्तांत को प्रामाणिक और विश्वसनीयता प्रदान करते हैं। पंकज बिष्ट की यात्रा वृतांत भी केवल स्थान के भौगोलिक वर्णन तक सीमित नहीं रहते बल्कि वे उन स्थानों से जुड़े ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तथ्यों को भी अपने लेखन में समाहित करते चलते हैं, जिसके माध्यम से उनका यात्रा–वर्णन अधिक प्रामाणिक और ज्ञानवर्धक बन जाता है। वे तथ्य और अनुभव दोनों का संतुलित समन्वय इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि उनका यात्रा वृतांत केवल साहित्य अभिव्यक्ति न रहकर शोध की दृष्टिकोण से भी उपयोगी सिद्ध होता है। इस दृष्टि से उनका यात्रा वृतांत "प्राकृतिक सौंदर्य मानवीय बर्बरता और वीरता की कहानियों के बीच" के एक अंश को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जा सकता है जिसमेंअंडमान के पोर्ट ब्लेयर शहर से जुड़ी अपनी यात्रा के अनुभव को व्यक्त करते हुए पंकज बिष्ट लिखते हैं–"शवयात्रा जिस दिशा में जा रही थी उसी तरफ हल्की सी चढ़ाई के बाद बायीं ओर बदनाम सेल्युलर जेल है जिसे पूरा हुए गत वर्ष सौ साल हो गए हैं। आज यह एक ऐतिहासिक महत्व का राष्ट्रीय स्मारक है। 60 फीट की ऊंचाई पर यह तीन और समुद्र से घिरी है और ठीक सामने है रहस्यमई रॉस द्वीप। प्रवेश द्वार पर ही, जहां कभी जेल का कार्यालय रहा होगा, संग्रहालय और पुस्तकालय है। इसे देखने हर रोज सैकड़ों लोग आते हैं। पहिए के आरों–से मध्य बुर्ज से निकलते हुए सात में से अब इसके सिर्फ तीन स्कंध ही बाकी रह गये हैं। इसके तीन और चार नंबर के स्कंधों को बंकर आदि बनाने के लिए 1943 में जापानियों ने तोड़ा था। इसका लोहा व ईमारती सामान इसमें इस्तेमाल किया गया। सन् 1960 में स्कंध दो और पांच को भी अस्पताल बनाने के लिए तोड़ दिया गया। इसका नाम गोविंद बल्लभ पंत अस्पताल है। इसकी तिमंजली बैरको में कुल 696 काल कोठरियाँ थी जिसमें हर कैदी को कम से कम 6 माह तक एकांत में रहना पड़ता था।"[4] पंकज बिष्ट के यात्रा वृतांत का यह अंश इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि उनके यात्रा वृतांतों में व्यक्तिगत अनुभव,

स्थानीयता के साथ–साथ उस क्षेत्र से जुड़ी घटनाओं की तथ्यात्मक प्रस्तुति प्रमुख विशेषता के रूप में सामने आती है जो उनके यात्रा वृतांतों को साहित्यिक रचना के रूप में प्रस्तुत करने के साथ–साथ शोध उपयोगी सामग्री में भी परिवर्तित कर देती है। पोर्ट ब्लेयर स्थित राष्ट्रीय स्मारक, उस क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व, निर्माण, संरचना तथा समय–समय पर हुए परिवर्तनों का भी इस यात्रा वृतांत में उल्लेख किया है। जिससे पाठकों को विश्वसनीय ठोस जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पंकज बिष्ट का यात्रा साहित्य उनके निजी अनुभवों की सीमाओं से आगे बढ़कर व्यापक सामाजिक और ऐतिहासिक दस्तावेज का स्वरूप धारण कर लेते हैं।

प्रकृति का साहचर्य किसी भी लेखक के लिए केवल सौंदर्य के अनुभव का आधार नहीं बल्कि एक गहन आत्मिक और संवेदनात्मक अनुभूति का स्रोत भी होता है। प्रकृति के विभिन्न रूप पहाड़, नदियां, वन, आकाश, परिवेश लेखक की मनः स्थितियों को सकारात्मक रूप में प्रभावित करते हैं और उसकी दृष्टि को व्यापक और संवेदनशील बनाते हैं। पंकज बिष्ट के यात्रा–वृतांतों में भी प्रकृति का यह साहचर्य स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है, जहां प्राकृतिक दृश्य केवल वर्ण्य वस्तु न रहकर उनके विचारों, अनुभूति और सामाजिक दृष्टि को आकार देने वाले सिद्ध होते हैं। उनके लगभग सभी, विशेष रूप से उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र से जुड़े यात्रा–वृतांतों में प्राकृतिक सौंदर्य के चित्र प्राप्त होते हैं। इस संबंध में उनके यात्रा वृतांत 'जब तक बर्फ नहीं पड़ती:' के इस अंश को देखा जा सकता है जहां प्रकृति के असीमित सौंदर्य को अपने शब्दों से बयां कर पाने की असमर्थता को व्यक्त करते हुए पंकज बिष्ट लिखते हैं–"कभी पढ़ा था। तब से लगातार चाहता रहा हूं इस सौंदर्य और मौत के संगम को देखना। जिस तरह अति सौंदर्य का एक आतंक है, उसी तरह मृत्यु का भी एक सौंदर्य है। कितनी अदभुत होगी वह यात्रा जो बीहड़ों, घाटियों, बर्फ और हिमनदों के बीच से गुजरी। मैं सोचता हूं, दौड़ता चला जाऊं रूपकुंड, कफनी या सुंदरढुँगा। पर तब ३ धाकुड़ी सी सुंदर जगह कल्पना में संभव है। या कहूं कि यह इंद्रियां उस विराटता को और उस सौंदर्य को संजो नहीं सकतीं इसलिए उसे अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। इसके लिए तो दिव्य चक्षु चाहिएः 'द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।"[5] यहां लेखक ने न केवल प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति अपने प्रेम को प्रकट किया है वरन् प्राकृतिक सौंदर्य की विराटता को अनिर्वचनीय घोषित किया है। वे प्रकृति को महसूस करते हैं और उसे बहुत ही सरल प्रभावशाली ढंग से पाठको तक पहुंचा जाते हैं। यही कारण है कि उनके यात्रा वृतांत में प्रकृति का चित्रण जीवंत और भावपूर्ण बनकर उभरता है। प्राकृतिक सौंदर्य चित्रण का एक उदाहरण उनके यात्रा वृतांत 'स्मृतियों की रेल और तिब्बत जाने वाली गाड़ी' से भी लिया जा सकता है, जिसमें तिब्बत के बर्फ से ढके पहाड़ उन्हें इतना अधिक प्रभावित करते हैं, इसे अभिव्यक्त करते हुए वे लिखते हैं–"बर्फ से ढका पहाड़ इतना करीब मुझे मुनस्यारी में ही नजर आया था। बल्कि यहां और करीब था पर उस पर फैली बर्फ सजावटी थी। यानी करीब तो था, लेकिन वैसा आभास नहीं दे रहा था, जैसा मुनस्यारी में पहाड़ आंखों में आंखें डालकर चुनौती देता नजर आता है। यहां वह अंदाज नहीं था। बल्कि स्वत ही ग्लाइडिंग की याद दिला रहा था। क्या मजेदार जगह है! सीधे उछलिए और नीचे फैले विशाल शहर के ऊपर उतराने का आनंद लीजिए। दिल हुआ छोटी से दौड़कर वैसे ही उतर जाऊं जैसा बचपन में किया करता था। पहाड़ कहां जमीन से मिल रहे थे, बतलाना मुश्किल था,पर जगह दूर नहीं थी। हमारे यहां हर गगनचुंबी पहाड़ छोटे–छोटे पहाड़ों के कंधे पर टिका है। यहां हर पहाड़ की अपनी स्वायत्तता है–जमीन से आकाश तक। इसलिए भी अचानक नजर उसे नापने लगती है।"[6]

पंकज बिष्ट के यात्रा वृतांतों को यदि भाषा और शैली की दृष्टि से आंका जाए तो उनके यात्रा–वृतांतों में अत्यंत प्रभावपूर्ण सहज और बौद्धिकता से समन्वित भाषा–शैली का प्रयोग किया गया है। एक ओर जहां उनकी भाषा में सरलता और प्रवाह है वहीं दूसरी ओर विचारों की गंभीरता और विश्लेषणात्मक दृष्टि भी स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। उनके यात्रा वृतांत की भाषा–शैली में वर्णनात्मकता की अपेक्षा विश्लेषणात्मक और तथ्यप्रधान प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। वह किसी भी यात्रा स्थल का केवल वाह्य चित्रण करने के बजाय उससे जुड़े ऐतिहासिक तथ्यों और सांस्कृतिक संदर्भ हो अधिक महत्व देते हैं। इसलिए उनकी भाषा में उस स्थान के प्रति एक संतुलित और समझपूर्ण दृष्टिकोण उपस्थित रहता है जिसके माध्यम से वे अपनी वैचारिक प्रतिक्रिया और गहरी समझ को अभिव्यक्त करते हैं। इस कारण उनके यात्रा–वृतांतों की भाषा केवल भौगोलिक विशिष्टताओं के दृश्य को ही उपस्थित नहीं करती बल्कि विवेचनात्मकता, तथ्यात्मकता और बौद्धिक दृष्टि से समृद्ध हो जाती है। इस तथ्य को उनके यात्रा वृतांत 'आस्था की गुफाओं की चमक और कला के अंधेरे कोने' के इस अंश से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है जहां अजंता की गुफाओं से संबंधित अपनी यात्रा के अनुभव को व्यक्त हुए वे लिखते हैं–"तो क्या गांव बाद में बसा होगा? गांव के नाम से जुड़ा 'लेणी' शब्द नहीं बतलाता है कि इसका गुफाओं के साथ क्या संबंध रहा होगा? या फिर बौद्ध स्मृति को जबरन मिटाया गया होगा? या वे इस के महत्व को, इनके अस्तित्व से परिचित होने के बावजूद समझ नहीं पाए होंगे? आखिर इस तटस्थता के क्या कारण रहे होंगे? क्या किसी ने इन बातों को जानने समझने और व्याख्यायित करने की कोशिश की होगी? क्या किसी ने अजंता गांव से गुजरते हुए हर बार मेरी इच्छा हुई कि इस गांव में जाकर देखा जाए कि यहां कौन लोग रहते हैं? क्या उनकी किसी तरह से कोई संबंध इन कभी इन गुफा के बनाने वालों से रहा होगा? आखिर उन लोगों की बस्तियों का क्या हुआ होगा जो यहां चलने वाले कामों से शताब्दियों तक जुड़े रहे?"[7] इस अंश में पंकज बिष्ट अजंता एलोरा की गुफाओं से संबंधित सुंदर दृश्य को ही नहीं करते हैं बल्कि उन स्थानों के प्रति अपनी गहन संवेदना के कारण मन में उठने वाले विभिन्न प्रश्नों को भी सामने रखते हैं जिससे पाठक भी उनके दृष्टिकोण के साथ सामंजस्य से स्थापित कर लेते हैं। इस प्रकार उनके यात्रा–वृतांत मात्र किसी स्थान की यात्रा का विवरण ही नहीं है बल्कि उनकी वैचारिकी की अभिव्यक्ति का भी माध्यम भी है। की विश्लेषणात्मक शैली के प्रयोग के कारण उनके यात्रा–वृतांत गंभीर चिंतन प्रक्रिया का रूप धारण कर लेते हैं। जो यात्रा–वृतांतों को गंभीर और प्रभावपूर्ण बनाती है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि पंकज बिष्ट जी के यात्रा–वृतांतों में तथ्यात्मकता, स्थानीयता और प्रकृति– चित्रण का समन्वय उन्हें विशिष्ट और समृद्ध बनाता है। वास्तव में पंकज बिष्ट की रचनात्मकता की प्रमुख विशेषता उनकी संवेदनात्मक प्रखरता, विश्लेषणात्मक दृष्टि और भाषा की सादगी में निहित है जो उनके साहित्य को व्यापक पाठकीय संदर्भ में प्रासंगिक बनाती है। सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदनाओं और जनजीवन की समस्याओं की गहराई से अभिव्यक्ति उनके लेखन का प्रमुख आधार हैं। उनका यात्रा–साहित्य भी इन्हीं खूबियों से युक्त हैं जिसमें उन्होंने जहां एक ओर अपने द्वारा देखे गए विभिन्न स्थलों का सौंदर्यपूर्ण चित्रण करते हुए अपनी रचनात्मकता का परिचय दिया है तो वहीं ऐतिहासिक तथ्यों, सामाजिक संदर्भों और सांस्कृतिक विशेषताओं को समाहित करते हुए यात्रा वृतांत को वैचारिक एवं प्रमाणिक स्वरूप प्रदान किया है। स्थानीय जीवन और परिवेश का सजीव चित्रण उनके यात्रा वृतांतों को जीवंतता और आत्मीयता प्रदान करता है। इसके अलावा प्रकृति के सूक्ष्म और संवेदनात्मक वर्णन से उनमें सौंदर्यबोध और भावनात्मक गहराई

का समावेश भी होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पंकज बिष्ट के यात्रा वृतांत एक विश्वसनीय, ज्ञानवर्धक और शोध उपयोगी साहित्यिक दस्तावेज के रूप में हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाते हैं।

संदर्भ सूची

1. पांडेय आनंद. "विचरना मीरा के देश में ख़रामा–ख़रामा." बया पत्रिका, जनवरी–मार्च 2020, पृष्ठ संख्या– 180 .
2. बिष्ट, पंकज. "अपने देश में अपनी तलाश." ख़रामा–ख़रामा, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–11.
3. बिष्ट पंकज. "विद्रोह की पगडंडी: मीरा के देश में एक नास्तिक" ख़रामा–ख़रामा, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–36.
4. बिष्ट पंकज." प्राकृतिक सौंदर्य मानवीय बर्बरता व वीरता की कहानियों के बीच." ख़रामा–ख़रामा, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–36.
5. बिष्ट, पंकज. "जब तक बर्फ़ नहीं पड़ती." ख़रामा–ख़रामा, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–116.
6. बिष्ट पंकज. स्मृतियों की 'रेल' और तिब्बत जाने वाली गाड़ी" बया पत्रिका, जनवरी–मार्च 2020, पृष्ठ संख्या– 180 .
7. बिष्ट पंकज. "आस्था की गुफाओं की चमक और कला के अंधेरे कोने." ख़रामा–ख़रामा, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, संस्करण–2019, पृष्ठ संख्या–68.